रमज़ान एवं अन्य महीनों में हम जीवन कैसे बिताएँ?

मानव जीवन में आयोजन व योजना एवं प्लैनिंग का बड़ा महत्व है। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति एवं निपुण मानव नियोजन से काम करता है। विद्यालय व शिक्षालय तथा कालिजों के लिए जो पाठ्यक्रम (सिलबस) तैयार किया जाता है, वास्तव में वह छात्रों की शैक्षिक जीवन के लिए नियोजन व प्लैनिंग है।

माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के लिए योजना करते हैं। एक व्यापारी (व्यवसायी) अपने व्यापार को विक्रय (प्रचार) के लिए अपने बुद्धि में सांख्यिकीय व उदयोग आयोजन रखता है। व्यापारिक आयोजन पर अ़मल करते हुए व्यापारियां अपने योजनाओं का प्रसारण करते हैं। अपने उत्पाद (पदार्थ) का विज्ञापन करते हैं, अधिक वस्तु व कार्यक्रम हथियार व समाज में शक्ति के रखने के साथ-साथ अत्यन्त योजना करते हैं।

आयोजन केवल मनुष्य वातावरण में ही नहीं बल्कि हैवानात के समाज पर नज़र डाली जाए तो पशु-पक्षी, समुद्री जीव भी अपने-अपने रूप से योजना रखते हैं। कुछ जीव-जानवर मौसमी (समयानुकूल) के परिवर्तन के अनुसार से जीविका के लिए समरूप स्थान पर निवास करते हैं तथा दूसरे जंगल का रुक करते हैं। पशु-पक्षी मौसम के अनुसार से अपने स्थान को बदलते हैं। य

यहाँ तक के चींटियां गरमी के मौसम में सरदी के मौसम के लिए समूह व जमाव करती हैं।

जिस प्रकार मानव संसारी मामलात में योजना कर रहा है। माता-पिता अपने सन्तानों के भविष्य के लिए योजना कर रहे हैं। व्यापारी व्यापार व कारोबार को प्रचार देने के लिए आयोजना कर रहे हैं। सेना अपनी संगठन सर करने के लिए योजना कर रही है। हैवानात अपनी हैसियत से योजना कर रहे हैं।

इसी प्रकार एक बन्दे मुसलमान को परलोक (आखिरत) के जीवन कि चिन्ता करनी चाहिए। संसारी जीवन कि राहत के लिए आने वाले दिनों के लिए आयोजन करनी चाहिए। आखिरत में शान्ति व विश्राम के लिए भविष्य की नियोजन करनी चाहिए। अर्थात अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो। तथा प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह तआ़ला उसकी पूरी खबर रखता है।

(सुरह अल हश्रः 59:18)

जब संसार के कामों के लिए प्रबन्ध व योजना की जा रही है, नवीनतम व सांसारिक शिक्षा, व्यापार, सुरक्षिततता तथा अन्य सांसारिक कामों के लिए प्रबन्ध व आयोजन की जा रही है तो आखिरत के मामलात तथा धार्मिकर कर्म के लिए तथा अधिक प्रबन्ध किया जाना चाहिए है।

अल्लाह तआ़ला कि ओर से कोई वरदान मिल रहा है तो इस का सम्मान व आदर के लिए पहले से योजना होनी चाहिए. इस के लिए पहले से योजना होनी चाहिए।

रमज़ान के स्वागत का प्रथम खुत्बा- सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि गवाही

इस कारण से हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने माह रमज़ान कि पदार्पण से पूर्व इस के हितलाभ से संबंधित खुत्बे इरशाद फरमाए हैं। रमज़ान के स्वागत से संबंधि बुनियादी रूप से 3 रिवायतें हैं, जो रमज़ान के स्वागत के विषय पर 3 विशाल खुत्बों कि हैसिय रखती हैं-

माह रमज़ान कि आगामी (आमद) से पूर्व सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को इस कि आगामी कि खुश ख़बरी सुनाते। जैसा के मुसनद इ़माम अहमद में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को खुश ख़बरी सुनाते हुए उपदेश फरमायाः तुम्हारे पास रमज़ान के महीने कि आमद आमद (आगामी) है। यह एक बरकत वाला महीना है। अल्लाह तआला ने तुम पर इस के रोज़े फर्ज़ किए हैं। इस में जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं, दोज़क़ (नरक) के दरवाज़े बन्द किए जाते हैं तथा शैतानों को क़ैद किया जाता है। इस महीने में एक रात है जो हज़ार महीनों से श्रेष्टतर व बेहतर है, जो व्यक्ति उस रात कि भलाई से अज्ञात रहा तो वास्तव में वह अज्ञात रह गया।

(मुसनद इ़माम अहमद, मुसनद अबु हुरैरह, हदीस संख्याः 9227)

माह रमज़ान कि आगामी के साथ ही जन्नत के दरवाज़े का खोला जाना बतला रहा है के जो लोग माह रमज़ान में नेकियां करेंगे उन के लिए जन्नत के दरवाज़े खुले हुए हैं। जन्नत में प्रवेश द्वार उन के लिए तय है।

जन्नत अपनी सम्पूर्ण नेअ़मतों (वदान्यता व उदारता) के साथ उन का प्रतिक्षा कर रही है, तथा रमज़ान कि आगामी पर दोज़क़ के दरवाज़ों का

बन्द किया जाना, इशारा दे रहा है के इस मास मुबारक में नेक कर्म करने वालों के लिए दोज़क़ के दरवाज़े बन्द हैं। उन का ठिकाना तो जन्नत है।

इमाम बैहखी ने शुअ़बुल इमान में एक रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमायाः हज़रत रसुल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जब माह रमज़ान कि पहली रात होती है शैतान तथा सरकश जिन्नात पेडियों में जकड दिए जाते हैं। दोज़क़ के दरवाज़े बन्द किए जाते हैं, फिर उस का कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता, तथा जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, फिर उस का कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता, तथा एक सूचना देने वाला प्रति रात सूचना देता हैः ऐ नेकी को चाहने वाले! नेकी कर गुज़र, तथा ऐ बुराई से बाज़ आजा, अल्लाह तअ़ाला के दोज़क़ से आज़ाद किए हुए कई बन्दे होते हैं, रहमतों का यह सिलसिला हर रात जारी रहता है।

(शुअ़बुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3346)

माह रमज़ान में अल्लाह तअ़ाला कि ओर से विशेष रूप से ज़ाहिरी व बातिनी वातावरण को नेकियों के लिए चमकदार बना दिया जाता है। हर अनुसार से बन्दे के लिए नेकी आसान (सरल) कर दी जाती है तथा बुराई के कारण को अत्यन्त कम किया जाता है। शैतान कैदी होता है।

नफ्स, रोज़े के द्वारा वश में रहता है। हर ओर भलाई करने के लिए वातावरण आसान से आसान किया जाता है। इस नेअ़मत (उदारता) से हमें लाभ उठाना चाहिए। इस का आदर व सम्मान करना चाहिए।

रमज़ान के स्वागत का दुसरा खुत्बा, पहली रात- बख्शिश के समान

किसी बात को वर्णन करने के अनेक अंदाज होते हैं। बातत साधारण अंदाज में कही जाती है। इस के बजाए चेतावनी के साथ कही जाए तो इस कि महत्व मालूम होती है तथा यदि वर्णन करने से पूर्व प्रस्तावना लाई जाए तो वर्णन की जाने वाली बात कि ग़ैरमामूली महत्व स्पष्ट होती है।

सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने माह रमज़ान के बारे में प्रस्तावना के साथ वर्णन फरमा कर इस को ग़ैरमामूली महत्व को उजागर फरमाया। जैसा के सही इब्न खुज़ैमा में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमायाः सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः एक (आने वाला) तुम्हारे सामने आ रहा है तथा तुम उस का स्वागत करोगे। यह कथन 3 बार इरशाद फरमाया।

हज़रत उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन किया किः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! क्या कोई वही प्रवेश हुई? कहा कोई विरोधी आया है? फरमायाः नहीं! निवेदन किया! तो फिर कया घटना पेश होने वाली है? आदेश फरमायाः (माह रमज़ान कि योजना है) निस्संदेह अल्लाह तआ़ला माह रमज़ान कि प्रथम रात इस क़िबले को मान्ने वाले सम्पूर्ण इमान वाले लोग कि मग़फिरत (मुक्ति) फरमा देता है। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाते समय अपने हाथ मुबारक से क़िबले कि ओर इशारा फरमाया।

(सही इ़ब्न कुज़ैमा, हदीस संख्याः 1778)

रमज़ान का महीना अभी शुरु नहीं हुआ, रमज़ान के आयोजन से पूर्व सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस को महत्वपूर्ण दे कर वर्णन फरमाया, इस महिमा व वैभव उजागर फरमाई। इस के बारे में

मुक्ति (मग़फिरत) का इशारा सुनाया, ताकि इ़मान वाले रमज़ान के महिने कि आगामी से पूर्व तैयारी कर लें।

इस प्रकार महत्व के साथ वर्णन फरमाया के हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वही प्रवेश होने का संचेत किया। विरोधी के आक्रमण कि आशंका की, इस से मालूम होता है के माह रमज़ान से पूर्व एक संघटन के रूप पर इस के स्वागत कि तैयारी करनी चाहिए।

इस के पल-पल से लाभ उठाने के लिए बुद्धि व फिक्र रूप पर, ज्ञानी व कार्यरत रूप पर तथा सामाजिक व किफ़ायती रूप पर तैयार रहना चाहिए।

माह रमज़ान कि तैयारी तथा सहाबा का तरीक़ा

जैसा के --- तरीक़ अल हक़ में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत घोषित हैः-

भाषांतरः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के आप ने फरमायाः हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम जब माह शअ़बान का चांद देखते तो क़ुरान शरीफ को सीने से लगाए रहते तथा तिलावत (अनुवाचन) में व्यस्त रहते, मुसलमान अपने धन कि ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर तथा ग़रीब इस को प्राप्त कर के माह रमज़ान के रोज़े रखने कि शक्ति व क्षमता प्राप्त करें। राज्यपाल व ज़िम्मेदार लोग, क़ैदियों को तलब करते।

तथा इन में जो शरई़ सीमा के योग्य थे, इन पर सीमा जारी करते, वरना इन को रहा कर देते, व्यापारी लोग ज़िम्मे जो अधिकार हैं इन्हें समापन कर देते तथा जो चीज़ें प्राप्त करने की थीं इन्हें प्राप्त कर लेते यहाँ तक के जब रमज़ान का चांद देख लेते तो स्नान कर के एकता के साथ इ़बादत में व्यस्त हो जाते।

(-- तरीक़ अल हक़ जिल्द 1, पः 188)

उपर्युक्त रिवायत से स्पष्ट रूप पर मालूम होता है के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम माह शअ़बान में हर मंच पर माह रमज़ान कि तैयारी करते। कर्म के दृष्टिकोण से तैयारी के लिए तिलावत क़ुरान का विशेष प्रबन्ध करते।

किफायती मंच पर तैयारी करते हुए लेन-देन के मामला का संपादन करते। अपने ज़िम्मे जो अधिकार व ज़िम्मेदारी बाखी हैं इन्हें समापन करते। धन व राशी को वसूली करते। समाजि मंच पर तैयारी करते, बूढेलोग अपनी तैयारी के साथ-साथ दुसरों कि तैयारी का लिहाज़ रखते, शअ़बान में धन कि ज़कात निकालते, ताकि दरिद्र व गरीब सदस्य, रोज़ा रखने के लिए ज़कात कि राशी व पैसे के द्वारा तैयारी कर लें।

जिन क़ैदियों से शरई सज़ा संबंधित नहीं, इन्हें रिहा करते ताकि वह भी माह रमज़ान कि तैयारी कर लें। हर रूप से तैयारी करने के बाद जब माह रमज़ान का चांद देखते तो हमेशा ध्यान व एकाग्र हो जाते। सम्पूर्ण प्रबन्ध के साथ स्नान कर के हमेशा इ़बादत में व्यस्त हो जाते।

रमज़ान के स्वागत पर तीसरा प्रसारित खुत्बा

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने माह रमज़ान कि विशिष्टता व प्रतिष्ठा, रोज़ों कि फरज़ीयत तरावीह कि महत्वपूर्ण तथा शब खद्र कि उत्कृष्टता व उत्तमता पर निर्धारित विशाल खुत्बा आदेश परमायाः यह रमज़ान के स्वागत के विषय पर लम्बा खुत्बा है। जिसकी रिवायत इ़माम बैहखी ने शुअ़बुल इ़मान में की हैः-

भाषांतरः- हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने शअ़बान के अंतिम दिन हम से खुत्बा आदेश फरमाया तथा

इरशाद फरमयाः अय लोगो! तुम पर एक वैभव व प्रतिभा वाला महीना छायामात्र हो चुका है। वह बरकत वाला महीना है, वह ऐसा महीना है जिस में एक विशाल रात है जो 1000 महिनों से श्रेष्टतर है। अल्लाह तआला ने इस के रोज़ों को फर्ज़ घोषित किया तथा रात में इबादत करने को नप्ल घोषित दिया। इस महिने में जिस व्यक्ति ने नफ्ल कर्म व अमल किया वह इस व्यक्ति के प्रकार है जिस ने दूसरे महिने में फर्ज़ समापन किया तथा जिस व्यक्ति के प्रकार है जिस ने दूसरे महिने में 70 फराइज़ समापन किए।

तथा वह सब्र व धीरज (सहनशीलता) का महीना है तथा सब्र का सवाब व पुण्य जन्नत है तथा --- का मास है। यह ऐसा महीना है जिस में मोमिन का रिज़्ख (संपोषण व पोषण) बढा दिया जाता है। इस महिने में जिस ने एक रोज़ेदार व उपवासी को इफ्तार करवाया वह इस के पापों कि बख्शिश तथा दोज़क़ से इस कि गरदन कि स्वतंत्रता का कारण है तथा इस के लिए रोज़ेदार (उपवासी व तीव्रतर) के सवाब व पुण्य के बराबर प्रतिलाभ व सवाब है उपवासी के सवाब में कमी किए बिना।

हम ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! हम में से हर व्यक्ति वह नहीं पाता जिस के द्वारा वह रोज़ेदार व उपवासी को इफ्तार करवाए, तो हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः अल्लाह तआला यह पुण्य इस व्यक्ति को भी देता है जिस ने किसी रोज़ेदार व उपवासी को दूध के घूंट या एक खजूर या पानी के घूंट पर इफ्तार करवाया ता जो व्यक्ति किसी रोज़ेदार को पेट भर भोजन कराता है अल्लाह तआला इस को मेरे हौज़ से ऐसा घूंट पिलायगा के वह प्यासा ना होगा यहाँ तक के वह जन्नत में प्रवेश हो जाए।

तथा यह ऐसा महीना है जिस का आरंभ हिस्सा रहमत का है, बीचा का हिस्सा मग़फिरत (मुक्ति) का है तथा अंतिम हिस्सा दोज़क़ से आजादी का है तथा जो व्यक्ति इस महिने में अपने गुलाम (सेवक व दास) से बोझ

को कम करें अल्लाह तआला इस कि मग़फिरत (क्षमा व मुक्ति) फरमाएगा तथा इस को दोज़क़ से आजाद फरमाएगा।

तथा हज़रत हिम्माम कि रिवायत में इन शब्दों का समावेशन व उत्पत्ति है "माह रमज़ान में 4 चीज़ों को अधिक मात्रा में करो! इन में 2 चीज़ें ऐसी हैं जिन के द्वारा तुम अपने रब को राज़ी (सन्तुष्टी) कर सकते हो! तथा 2 चीज़ें ऐसी हैं जिन के अलावा तुम्हारे लिए कोई मौक़ा नहीं, अब रही वह 2 चीज़ें जिन के द्वारा तुम अपने रब को राज़ी (सन्तुष्टी) कर सकते हो! वह यह हैः कलिमे तैयिबा *ला इलाहा इल्लाहु मुहम्मदुर रसूल अल्लाह* का ज़िक्र करना तथा अल्लाह से मुक्ति व मग़फिरत कि कामना व इच्छा करना। अब वही वह 2 चीज़ें जिन के अलावा तुम्हारे लिए कोई चारा नहीं, वह यह हैः तुम अल्लाह तआला से जन्नत का प्रश्न करते रहो तथा दोज़क़ के अज़ाब व विपद से अल्लाह कि पनाह व रक्षा मांगो!"।

(शुअबुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3455, मिश्कातुल मसाबीह, पः 173/174, ज़ुजाजुतल मसाबीह, किताबुल सैम, पः 541)

हम रमज़ान कि तैयारी कैसे करें?

हमारे लिए अवश्य है के इस माह मुबारक कि प्रतिभा के पेश नज़र अल्लाह तआला कि बारगाह में तौबा व इस्तेग़फार करते हुए इस का स्वागत करें।

इन प्रतिभा व वैभव वाले क्षण को सन्तुष्ट समझते हुए इसके बरकात व सहायता प्राप्त करें तथा अपने समय को इबादत व समादर तथा भले कर्म करने में उपयुक्त व व्यस्त करें। क़ुरान कि तिलावत का खूब प्रबन्ध करें संबंधित सदस्य के अधिकार समापन कर दें, मामलात को साफ व शुद्ध बना लें। ज़कात संपादन कर के गरीबों को रमज़ान कि इबादत के लिए आमोद प्रमोद हो जाने का अवसर प्रदान करें।

माह रमज़ान कि आरंभ से पूर्व सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आदेश फरमाया हुआ एक-एक कलिमा अपने भीतर बडी कर्तव्य सो समोया हुआ है। नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस खुत्बे (धर्मोपदेश) के प्रारंभ में सारी मानव जाति से आचरण फरमाया, आप ने मानवता के संसार को आमंत्रण दिया।

माह रमज़ान के बारे में फरमायाः "तुम पर एक वैभव वाला महीना छाया हो चुका है।" आगामी को बतलाने के अ़रबी भाषा में बहुत से शब्द उपलब्ध हैं। परन्तु सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने *अज़ल्ल* (छायामात्र होने) के शब्द उपयोग फरमाया।

इस लिए के छाया के शब्द से रहमत व उदारता महरबानी बुद्धि में आती है। जिस प्रकार घना पेड अपने साये में रहने वालों को धूप कि कठिनता तथा वर्षा से बचाता है इसी प्रकार जो व्यक्ति माह रमज़ान के साये में आता है। इस के मामलात में व्यस्त रहता है। माह रमज़ान उसे क़ब्र कि तंगी, हश्र कि कठिनता तथा दोज़क़ कि गरमी से बचा लेता है।

यह कथन बतला रहे हैं के माह रमज़ान का पल-पल बन्दे, अल्लाह तआ़ला कि विशेष रहमत व कृपा तथा आनंद व महरबानी से नवाज़ा जाता है।

जहाँ कृपा व महरबानी अधिक होती है वहाँ कुश समय अज्ञानता व ग़फलत हो जाता है जैसा माता-पिता में पिता कि नाते से माह सन्तान पर अधिक महरबान होती है इसी कारण से सन्तान माह माँ का पालन में नाते के अनुसार से अधिक सुस्त दिखाई देती है।

इसी कारण से सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने रहमत के साथ प्रतिभा को उजागर किया के जो महीना तुम पर छायामात्र हो रहा है

रहमतों वाला महीना है। जो महीना तुम्हारे पास आया है वह आन्लद व महरबानी वाला महीना है तथा यह महीना वैभव वाला भी है।

इस के सम्मान को व्यर्थ ना किया जाए, यह बडी शान वाला महीना है, इस का आदर व सम्मान किया जाए। जो इस कि प्रतिभा व प्रतिष्ठा को --- रखता है, उस पर करम दो बाला हो जाता है तथा जो आदर व इज्जत नहीं करता वह रहमत से दूर हो जाता है।

माह रमज़ान का प्रबन्ध- मुक्ति का साधन

हज़रत अबुल हसनात सैयद अबदुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पुस्तक फज़ाइल रमज़ान में माह रमज़ान कि प्रतिभा व प्रतिष्ठा समापन से संबंधित एक हिकायत ज़िक्र फरमाई हैः

एक पारसी थे, अपने नंदन को देखे के रमज़ान के महिने में मण्डी (बाजार) में खाता जा रहा है। जैसे पान आदि त अपने बेटे को मारे तथा कहे के नायालक (अक्षम)! मुसलमानों के रमज़ान कि इज्जत नहीं करता। किसी ने पारसी को इस के मृत्यु के बाद देखा के जन्नत में पलंग पर बैठा है।

पूछा के जन्नत में कैसे पहुंच गए? वह कहे के जब मेरा समय खरीब आया आदेश हुआ के फरिश्तो इस को कुफ्र (उल्लंघन) पर मत रहने दो, इस से कहो के तु ने रमज़ान कि इज्जत व आदर की है इस लिए हम कहते हैं के तु हमारे लिए मुसलमान हो जा। मैं मुसलमान होने के बाद मरने का समय शुरु हुआ।

(फज़ाइल रमज़ान – पः25)

रमज़ान के महीने कि उपेक्षक मुक्ति से वंचित

जो व्यक्ति माह रमज़ान कि इज्जत व आदर नहीं करता इस महिने में अपने लिए मुक्ति व मग़फिरत कि सामाग्री प्राप्त नहीं करता। उस के लिए विनाश बतलाई गई है। जैसा के मुसतदरक अ़ला सहिहैन में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत कअ़ब बिन उ़जरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने कहा- हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मिम्बर (-- कि एक सीढी पर खदम मुबारक रखे तो आमीन फरमाया, जब दूसरी सीढी पर खदम मुबारक रखे तो आमीन फरमाया तथा जब तीसरी सीढी पर खदम मुबारक रखे तो आमीन फरमाया।

जब सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मिम्बर से नीचे आए तो हम ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! हम ने आज मिम्बर पर आप को तशरीफ ले जाते समय ऐसे कथन सुने के इस से पूर्व इस प्रकार ना सुने थे। हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया के जिब्रील अमीन मेरे पास उपस्थित हुए तथा कहाः जो व्यक्ति रमज़ान को पाय तथा इस कि मग़फिरत (मुक्ति) ना हो वह अल्लाह कि रहमत से दूर हो, मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने कहाः आमीन। जब मैं दूसरी सीढी पर खदम रखा तो जिब्रील ने कहाः जिस व्यक्ति के सामने आप का नाम मुबारक ज़िक्र किया जाए तथा वह आप पर दुरूद ना पढे वह अल्लाह कि रहमत से दूर हो, मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने कहाः आमीन। जब मैं तीसरी सीढी पर खदम रखा तो जिब्रील ने कहाः जिस व्यक्ति के माता-पिता या इन में से एक बूढापे को पहुंच जाए तथा वह इन कि सेवा कर के जन्नत का अधिकारी ना बन सके वह अल्लाह

कि रहमत से दूर हो, मैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने कहाः आमीन।

(मुसतदरक अ़ला सहिहैन, हदीस संख्याः 7365)

रमज़ान के महीने में हमारी ज़िम्मेदारी

अल्लाह तआला ने अपने हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नाते से मुसलिम उम्मत को अपनी बेपाया वरदान व नेअमतों एवं रहमतों से संबोधित किया जिनका धन्यवाद तथा सम्मान पर अधिक नेअमतों में समावेश करने का वचन व वादा किया।

अल्लाह तआला की इन विशाल व महान वरदानों में एक उच्चतर वरदान व नेअमत रमज़ान का पावन महीना है। जिस में अल्लाह तआला की रहमत के दरवाज़े हमेशा खुले रहते हैं तथा अल्लाह तआला के बनेदे प्रत्यक अल्लाह की रहमत से आभूषण होते रहते हैं।

अल्लाह तआला ने अपनी अंतिम पुस्तक क़ुरान मजीद प्रकट करने के लिए इसी महीना व मास का चुनाव किया। अर्थात इस अनुसार से इस की उत्तमता व सम्मान स्पष्ट करते हुए नाम की स्पष्टीकरण के साथ क़ुरान पाक में इस का वर्णन कियाः-

भाषांतरः रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अंतर के प्रमाणों के साथ। अतः तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले।

(सुरह अल बक़राः 02:185)

रमज़ान के महीने की आगमन के साथ ही अल्लाह तआला की रहमत का दरया जोश ज़न होता है। प्रत्येक सो गुण रहमत का प्रकट होता है।

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क्यों के अल्लाह तआला से सम्पूर्ण कायनात के लिए सरापा-रहमत हैं आपकी पावन ज़ात से प्रत्येक अल्लाह की रहमत के जलवे उजागर होते हैं अर्थात आप ने अल्लाह तआला की रहमत की तजल्ली से अफनी उम्मत को मालामाल करते हुए रमज़ान के महीने में फर्ज़ रोजों के अतिरिक्त तरावीह व अतेकाफ जैसी इबादतें नियुक्त कीं तथा सदखा व खैरात (दान व दक्षिणा) का अनुदेश दिया।

क़ुरान करीम की तिलावत व सुन्ने का प्रबन्ध करने की शिक्षा व निर्देश किया तथा इन सम्पूर्ण कर्म व कर्म पर असामान्य सवाब व पुण्य की शुभ-सूचना प्रदान की।

ये सारी बातें वास्तव में रहमतुल-लिल-आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अपनी उम्मत पर कमाल स्तर व दर्जा प्रदान की आईनेदार हैं सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन गुणों में एक गुण उदारता व दानशीलता है, रमज़ान के महीने में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अन्य महीनों के समान अधिक उदारता व बख्शिश करते।

जैसा के सहीह बुखारी, जिल्द 01, हदीस संख्याः 06, में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लोगों में सब से अधिक उदारता व दानशीलता प्रत्येक समय से अधिक इस समय हो जाती जब रमज़ान के महीने में जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम आप की सेवा में उपस्थित होते। और रमज़ान की प्रत्येक रात आप उपस्थित होकर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से क़ुरान करीम का दौर फरमाते, निस्संदेह नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का कुशलता व भलाई में जो लाभ व उदारता के लिए छोड़ी हुई तेज़ हवाओं से भी अधिक है।

(सहीह बुखारी, जिल्द 01, पः 06, हदीस संख्याः 06)

रमज़ान के महीने की विशेष उदारता व दानशीलता से संबंधित इमाम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 458 हिज़्री) की शुअबुल इमान में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमायाः जब रमज़ान का महीना आता तो नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम प्रत्येक क़ैदी को आज़ाद कर देते तथा प्रत्येक माँगने वाले को प्रदान करते।

(शुअबुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3475)

रमज़ान के महीने में पुण्य कि संख्या में अधिकता

यह महीना बरकतों वाला महीना है। इस मुबारक मास में करम दुगुना होता है। अन्य 11 महिनों में नफ्ल का सवाब व पुण्य नप्ल के बराबर तथा फर्ज़ का सवाब फर्ज़ के बराबर होता है परन्तु इस महिने में सवाब कि शरह बढादी जाती है। कर्म वही होता है, सवाब व पुण्य बढा दिया जाता है।

जो व्यक्ति नफ्ल समापन करता है उसे फर्ज़ के बराबर सवाब दिया जाता है। जो व्यक्ति फर्ज़ समापन करता है उसे 70 फराइज़ के बराबर पुण्य दिया जाता है। नमाज़ का संपादन कि बात हो तो नमाज़ के अरकान वही हैं।

धन खर्च करने का मामला हो या कोई और कर्म हो, -- इसी प्रकार रहे वही है जो दूसरे महिनों में होती है। परन्तु माह रमज़ान कि यह विशेष बरकत है के पुण्य व सवाब बढाया जाता है।

इमान वालों के रिज़्ख में अधिकता

इस प्रिय महिने में इमान वालों का रिज़्ख (संपोषण व पोषण) बढा दिया जाता है। ज़ाहिरी रिज़्ख भी बढाया जाता है तथा बातिनी रिज़्ख भी, शारीरिक भोजन में भी अधिकता होती है तथा रुहानी भोजन व ग़िज़ा में भी, ज़ाहिरी रिस्ख व जीविका में समावेशन हो तो हमारा दृष्टिकोण है, किसी व्यक्ति के लिए वर्ष भर जो भोजन, मेवे आदि उपलब्ध नहीं आतीं, दरिद्र से दरिद्र मुसलमान के लिए इस पावन महिने में सरलता व आसानी से उपलब्ध रहती हैं।

जगह जगह इफ्तारी बांटी जाती है। सहर व इफ्तार के लिए प्रबन्ध किया जाता है। रिज़्ख का बढना रिज़्ख के साधन व सामान पर निर्भर होता है, इस महीने में कसब के साधन बढ जाते हैं। आर्थिक व किफायती साधन में असमान्य रूप से अधिकता होती है।

बेरोज़गार सदस्य किफायती व आर्थिक कर के बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं तथा हदीस पाक कि बरकत ही है के रमज़ा के महिने में साधारण रूप से कर्मचारियों को बोनस (लाभांश) दिया जाता है।

बातिनी रिज़्ख (संपोषण व पोषण) के कया कहने! हर मुसलमान पर अल्लाह तआला कि विशेष इनायतें होती हैं। माह रमज़ान के सवेरे व शाम (निशा) रहमतें प्रकट होती हैं। प्रतिदिन अल्लाह कि रहमत में डूबते हुए रहते हैं परन्तु उसे दिलवाले लोग ही जानते हैं। इस से अहले नज़र अनुभव रखते हैं। दर्शन (सर्वक्षण व निरीक्षण) करते हैं। विशेष अल्लाह तआला के प्रकाश से – होते हैं।

तरावीह की नमाज़ की विशिष्टता

सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, सुनन अबु दाउद, सुनन निसाई, जामे तिरमीज़ी, सुनन इब्न माजह शरीफ आदि में तरावीह की नमाज़ कि प्रतिष्ठा व विशिष्टता से संबंधित हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जो व्यक्ति रमज़ान की रातों में इमान कि स्थिति व एकांतता इबादत करे इस के पिछले व पूर्व पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।

(सहीह बुख़ारी, जिल्द 1, पः 269, हदीस संख्याः 2009 / सहीह मुस्लिम, जिल्द 1, पः 259, हदीस संख्याः 1815 / जामेअ अल तिरमीज़ी, जिल्द 1, पः 147, हदीस संख्याः 619 / सुनन अबु दाउद, जिल्द 1, पः 194, हदीस संख्या 1373 / सुनन अन निसाई, जिल्द 1, पः 308, हदीस संख्या 2174 / सुनन इब्न माजह, जिल्द 1, पः 118, हदीस संख्याः 1316 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 362)

तरावीह की नमाज़ का आदेश

तरावीह कि नमाज़ पुरुष लोग तथा महिलाओं दोनों के लिए सुन्नते-मौक़ेदह है। मसजिद में जमात के साथ तरावीह अदा करना, पुरुष लोग के लिए सुन्नते-किफाया है। यदि किसी इलाक़े के सम्पूर्ण सदस्य जमात छोड दें तो सब सुन्नत छोडने वाले घोषित पाएंगेः-

जैसे के दुर्रे मुक़तार में हैः-

भाषांतरः- तरावीह की नमाज़ पुरुष लोग तथा महिलाओं के लिए सुन्नते-मोक़ेदह है तथा इस में जमात सुन्नते-किफाया है।

(दुर्रे मुक़्तार, जिल्द 1, पः 520)

20 रकात का सबूत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य कर्म से-

तरावीह की नमाज़ से संबंधित जो परिमित व विस्तार रिवायतें शब्द के अंतर के साथ वर्णन हुईं इन का वर्णन किया जा चुका, जिस से तरावीह की नमाज़ जमात के साथ पढना साबित हुआ।

अधिकारपूर्ण हदीस कि किताबों तथा फिक़्ह कि पुस्तकों के हवाले से हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह धन्य कर्म वर्णन किया जाता है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने 20 रकात तरावीह संपादन की।

मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, मुसनद अ़ब्द बिन हमीद, शरह सहीह अल बुख़ारी ला बिन बताल, अल सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, अल मुअ़जम अल औसत लित तबरानी, अल असतज़कार वल जामअ़ अल मज़ाहिब फिक़्हा अल असार व ऊलेमा अल अखतार ला बिन अब्दुल अलबर, अल तमहीद अल माफी अल मवातामिन अल मआ़नी वा असानीद ला बिन अब्दुलबर्र, मजमअ़ अज़ जवाईद लिल हैतमी, खुलासतुल अहकामफी महमात अल सुनन व खवाइ़द अल इसलाम लिल नववी, नसब अल रायह फी तक़रीज अहादीस अल हिदायह लिल ज़ैलई, फतहुल बारी शरह सहीह बुख़ारी ला बिन हज्र असखलानी, अल मतालिब अलआ़लियह ला बिन हज्र असखलानी, अलतक़यस अ हबीर फी तक़रीज अहादीस अल राफअ़ अल कबीर हज्र असखलानी, फतहुल खदीर ला बिन हिम्माम, अ हावी लिल फतावा लिल सुयूती, तनवीर अल हवालिक लिल सुयूती, नेल अल औतार लिल सौ कानी, मुक़ता अल क़ालिख अ़ला अल बहरुरराईख ला बिन आबिदीन अल शामी, सबुलुल हुदा वर्रिशाद लिल सालेह, अतहाफ अल क़ैरह अल महरह लिल बौसीरही, हाशियह अल तहतावी अ़ला मराखी अल फलाह, ज़ुजाजातुल मसाबीह मुहद्दिसे-देक्कन तथा अल फिक़्ह अल इस्लामी वादलालतुल लिल ज़हीली में हदीस पाक पाक हैः-

भाषांतरः- सैयदना अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से वर्णित है हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रमज़ान के महीने में 20 रकात तरावीह और वित्र संपादन फरमाया करते थे।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 5, पः 225, हदीस संख्याः 7774 / मुसनद अब्द बिन हमीद, हदीस संख्याः 655 / शरह सहीह अल बुखारी, जिल्द 5, पः 154 / अल सुनन अल कुबरा, जिल्द 2, पः 698, हदीस संख्याः 4615 / अल मुअ़जम अल औसत अल तबरानी, जिल्द 1, पः 444, हदीस संख्याः 802 / अल मुअ़जम अल कबीर अल तबरानी, जिल्द 5, पः 433 हदीस संख्याः 11934 / अल असतज़कार, हदीस संख्याः 222 / अल तमहीद अल मौतामिन अल मआ़नी वल असातीद, जिल्द 8, पः 115 / मजमअ़ अज़ ज़वाईद, जिल्द 3, पः 172, हदीस संख्याः 5018 / कुलासतुल अल अहकाम फी महमाक अल सुनन वखू वआ़द अल इसलाम लिल नववी, जिल्द 1, पः 579, हदीस संख्याः 1971 / नसब अर रियाह फी तक़ीर अहादीस, किताबुस सलाह, फस्ल फी खियाम शहर रमज़ान, फतहुल बारी शरह सहीह अल बुखारी, बाब फज़्ल मिन खियाम रमज़ान, अल मुतालिब अल आ़लियह ला मिन हज्र असखलानी, किताबुल नवाफिल, बाब खियाम रमज़ान, जिल्द 1, पः 425, हदीस संख्याः 598 / अल तलक़ीसुल हबीरि ला मिन हज्र असखलानी, जिल्द 2, पः 882, हदीस संख्याः 1676 / फतहुल बारी शरह अल हिदायह ला मिन अल हिम्माम, जिल्द 1, पः 485 / अल हावी लिल फतावा लिल सुयूती, पः 354 / तनवीर अल हवालिक शरह मौता अल इमाम मालिल लिल सुयूती, किताबुस सलाह फी रमज़ान, जिल्द 1, पः 134 / नील अल औतारी लिल शौकानी, बाब सलाह अल तरावीह / मिनह अल क़ालिख अ़ला अराईख ला मिन आबिदीन अस शामी, जिल्द 2, पः 117

/ सबुलुल हुदा वर्रिशाद, जिल्द 8, पः 267 / मिरखाह मफातीह शरह मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 175 / अतहाफुल क़ीरह मुरह, हदीस संख्याः 1725 / हाशियह अल तहतावी अ़ला मिराखी अल फलाह, फस्ल फी सलाह तरावीह / ज़ुजाजातुल मसाबीह, अल मुहद्दिसे-देक्केन, बाब खियाम शहर रमज़ान, जिल्द 1, पः 366 / अल फिक़्ह अल इसलामी, अल नवाफिल औ सलाह अत तवूअ़)

रमज़ान के महीने में क्या करें क्या ना करें?

रमज़ान का महीना क़ुरान के प्रकट होने का महीना है। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्म ने अंत शअबान में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के बीच खुत्बा आदेश किया के तुम पर क विशाल महीना आने वाला है। ये वह विशाल महीना है जिस का प्रथम भाग रहमत का है तथा बीच का हिस्सा मुक्ति व मग़फिरत का तथा अंत हिस्सा नरक से आज़ादी का है।

सुनन नसाई में हदीस पाक है, नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः अल्लाह तआला ने तुम पर रमज़ान के रोज़े फर्ज़ किए हैं तथा मैं इस के खियाम तरावीह को सुन्नत घोषित देता हुँ।

तरावीह की नमाज़ सम्पूर्ण एक महीना संपादन करें, एक दहा या 3 रात में क़ुरान सुन कर तरावीह छोड़ना बल्कि सम्पूर्ण महीना तरावीह की नमाज़ का प्रबन्ध करें।

रमज़ान के महीने में रोज़ा एवं तरावीह के अतिरिक्त क़ुरान पाक का दौर करना ये भी नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत करीमा है। सहीह बुखारी में हदीस पाक है के नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रमज़ान के महीने में हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम के साथ क़ुरान पाक का दौर किया करते।

इस के अतिरिक्त रमज़ान के अंतिम अशरे (10 दिन) में एतेकाफ करना ये भी आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की सुन्नत है। आरम्भ में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक महीने का एतेकाफ किया फिर आप विशेष रूप से रमज़ान के महीने के अंतिम 10 दिनों में एतेकाफ करते रहे।

कुछ लोग ये समझते हैं के "ज़कात केवल रमज़ान ही में संपादन व अदा की जा सकती है"। ज़कात से संबंधित धन्य शरीअत का आदेश ये है के

निसाब के प्रकार व संख्या में धन पर जब वर्ष बीत जाए तो ज़कात फर्ज़ हो जाती है। यदि रमज़ान से पूर्व ही धन निसाब पर वर्ष बीत जाए तो रमज़ान से पूर्व ही ज़कात फर्ज़ हो जाती है, इस के विरुद्ध इस के यदि कोई रमज़ान में पेशगी (पहले ही) ज़कात संपादन करना चाहे तो इस में कोई समस्या नहीं।

रमज़ान के महीने में विशेष रूप से पाँचों समय की नमाज़ जमात के साथ संपादन करें, कुछ लोग सहर के बाद घर ही में नमाज़ पढ़ कर सो जाते हैं तथा कुछ लोग अस्र की नमाज़ के समय के खरीब खरीदारी के लिए निकलते हैं, विशेष रूप से रमज़ान में ऐसी ग़फलत व उपेक्षा ना होनी चाहिए।

पाँचों समय की नमाज़ों के अतिरिक्त तहज्जुद की नमाज़, इशराख, चाश्त तथा अव्वाबीन की नमाज़ों का भी प्रबन्ध किया जाए। गरीब व दरिद्र लोगों का योगदान किया जाए। इस सिलसिले में अपने परिवार के गरीब लोग की ओर योगदान में हाथ बढ़ाएँ, अपने मातहत (अधीनस्थ) लोगों पर आसानी करें।

इस महीने में रोज़ा एवं तरावीह के अतिरिक्त विशेष रूप से 4 चीजों का प्रबन्ध करने का आदेश किया गया है। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश किया:

भाषांतर: रमज़ान में 4 चीज़ों की अधिकता करो इन में 2 चीज़ें ऐसी हैं जिन के द्वारा तुम अपने रब को सन्तुष्ट कर सकते हो, तथा 2 चीज़ें ऐसी हैं जिन के बिना तुम्हारे लिए कोई चारह नहीं, अब रही वह चीज़ें जिन के द्वारा तुम अपने रब को सन्तुष्ट व राज़ी कर सकते हो, वह ये हैं- कलिमे तैयिबा का विर्द करना तथा अल्लाह से मुक्ति व मग़फिरत माँगना। अब रही 2 चीज़ें जिन के बिना तुम्हारे लिए कोई चारा नहीं, वह ये हैं- तुम अल्लाह तआला से जन्नत का प्रश्न करते रहो तथा नरक व दोज़ख के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो।

(शुअबुल ईमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3455)

बिना किसी शरई तकलीफ व रोग के रोज़ा ना छोड़ें तथा विशेष रूप से रोज़े की स्थिति में नाजायज़ व हराम कार्य व कामों के अतिरिक्त मकरूहात व मुशतबहात से भी बचते रहें।

जो लोग रोज़ा तो रखते हैं किन्तु पापों व गुनाहों से नहीं बचते तो ऐसे लोगों की इबादत अल्लाह तआला के दरबार में स्वीकार का स्तर प्राप्त नहीं करती, जैसा के सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः जो व्यक्ति (रोज़े में) झूठ बात (और बेहुदा व धृष्ठ कर्म) को नहीं छोड़ता तो अल्लाह तआला को कोई परवाह व चिन्ता नहीं के वह खाना-पीना एवं भोजन छोड़ दे।

(सहीह बुखारी, किताब उस सौम, हदीस संख्याः 1903)

एतेकाफ की प्रतिष्ठा व उत्तमता

रमज़ान के महीने के अंतिम 10 दिनों में एतेकाफ का प्रबन्ध करना सुन्नते-किफाया है। मसजिद में इबादत की नीयत के साथ ठहरने का नाम एतेकाफ है। एतेकाफ का हदीसों में बहुत सवाब व पुण्य आया है।

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लमने आदेश किया के एतेकाफ करने वाला पापों व गुनाहों से बाज़ रहता है, तथा नेकियों से उसे इस प्रकार सवाब व पुण्य मिलता है के जैसे इस ने सम्पूर्ण नेकियाँ कीं।

(सुनन इब्न माजह, किताब उस सियाम, हदीस संख्याः 1853)

सदखे-फित्र की श्रेष्ठता

इसलाम ने समाज के अवश्यकता व ज़रूरतमंद लोगों के खुशियों में शरीक करने का अनुदेश किया तथा बड़े छोटे पुरुष व महिला पर सदखे फित्र अनिवार्य व वाजिब कर दिया ताकि गरीब व दरिद्र लोगों को भी ईद की खुशियों से हिस्से मिल सके।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने धनवान और फखीर की ओर से सदखे फित्र संपादन करने का आदेश दिया फिर आदेश कियाः

भाषांतरः अब रहा तुम में का धनवान व मालदार व्यक्ति! तो अल्लाह तआला इस को पवित्र कर देता है और तुम में का दरिद्र! जितना वह सदखा करे अल्लाह तआला उसे इस से अधिक प्रदान करता है।

(मुसनद इमाम अहमद, हदीस संख्याः 22553)

सदखे फित्र उस आज़ाद मुसलमान व्यक्ति पर अनिवार्य व वाजिब है जिस के पास इतना धन हो जो निसाब तक पहुँचता हो, असली अवश्यकता से अधिक और उधार से मुक्त हो।

सदखे फित्र गेहूँ के रूप में संपादन करना हो तो आधा (1/2) साअ तथा यदि जौ या खजूर या मुनख्खा एक साअ देना चाहिए।

वर्तमान वज़न के ग्रामों में इस का वज़न 1 किलो 106 ग्राम के समान होता है। सदखे फित्र गेहूँ देने की स्थिति में सावधानी के रूप में सवा किलो संपादन किया जाए।

कर्मचारियों का बोझ कम करने कि हिदायत

नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस पावन महिने में गुलामों के बोझ कम करने का उपदेश दिया। आदेश फरमायाः जो व्यक्ति

इस महिने में अपने गुलाम (दास) से बोझ कम करे अल्लाह तआअला इस कि मग़फिरत (मुक्ति) फरमाएगा तथा इस को दोज़क़ से आज़ाद फरमाएगा।

इस हदीस पाक के अनुक्रम में हर वह सदस्य आता है जिस के प्रति कोई कार्य करता है। जिस कि निगरानी में कोई ज़िम्मेदारी पूरी करता है। जो अपने मातहत लोग कि ज़िम्मेदारियों को कम करता है। अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है के अल्लाह उसे भी पुण्य व सवाब से अनुदान करे।

अधिकारी व पदाधिकारी अपने कर्मचारियों के ज़िम्मेदारियों को कम करें। मैनेजर व संचालक अपने कार्यकर्ता का बोझ हलका करें। हर वह व्यक्ति जो दुसरों पर प्रबन्धक रूप से अधिकार रखता है। उन के लिए सुविधा संभरण करें। सरलता व आसानी कि रोह निकालें।

अंत में अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है के हमें माह रमज़ान का बेहतर रूप पर स्वागत करने कि मार्गदर्शन बख्शे। इस के लिए सम्पूर्ण रूप से तैयारी करने कि हिदायत दान करे।

इस मुबारक महीने के हर पल व क्षण का आदर व सम्मान करने वाला बनाए। इस कि विशिष्ठ बरकतों से हमारे ज़ाहिर व बातिन को उजागर कर दें।

ईद का सन्देश – प्रसन्नता व आनन्द

वासत्व में खुशी व आननन्द तथा रंज व दुःख मनुष्य की भावना व तबीयत पर आने वाले हालात हैं। जैसे-जैसे तबीयत में अंतर आता है हालात भी अनेक होते हैं। जैसे ये हालात मनुष्य फितर में प्रवेश हैं अर्थात जब भी ईद का दिवस आता है ये खुशी, आनन्द व प्रसन्नता तबीयत पर उजागर होती है क्यों के ईद का दिन नेअमतों व वरदान के प्रदान का दिन होता है।

ईद का शब्द *औद* से है जिस का अर्थ लौटने के हैं, ईद को ईद इस लिए कहते हैं के ये दिन प्रत्येक वर्ष नव आनन्द व सुख लाता है तथा इस लिए भी कहते हैं के इस दिन अल्लाह तआला बन्दों को कृपा व दया से संबोधिथ करता है, तथा एक कारण ये है के बन्दा इस दिन अल्लाह तआला तथा इस के हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का पालन व आज्ञाकारी की ओर लौटने है इसी लिए इस को ईद कहा जाता है।

जो बन्दे पालन व आज्ञा, इबादत व धर्मनिष्ठ के साथ खुशी मनाते हैं वह अल्लाह तआला के महबूब हैं तथा जो घमण्ड व अवज्ञा के साथ सुख व खुशी का प्रकट करते हैं वह अल्लाह तआला के पास अप्रसन्न हैं जैसा के अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः निश्चय अल्लाह तआला इतारने वालों को पसंद नहीं करता।

(सुरह अल-क़ससः 28:76)

इसलाम धर्म के साये रहमत में रहने वालों को अल्लाह तआला ने असीमित तथा कई ईदें प्रदान किए हैं, जिन में नामवर ईदें ये हैं-

(1)- ईदुल फित्र।
(2)- ईदुल अज़्हा।
(3)- ईदुल अयाद (ईदुल मलाद उन नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)।
(4)- ईदुल मोमिनीन (शुक्रवार)।

माननीय हदीसों में ईदुल फित्र के उत्तमता वर्णन हैं जिन में से एक हदीस पाक वर्णन की जा रही है जिस को इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में लिखा हैः-

भाषांतरः सैयदना सईद बिन अवस अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने पिता से वर्णित करते हैं, उन्हों ने कहा के हज़रत रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः जब ईदुल-फित्र का दिन आता है तो फरिश्ते चौराहों पर खड़े हो जाते हैं तथा निदा देते हैं- अए मुसलमानों की जमात! रब करीम की ओर चलो, जो कुशलता से संबोधित करता है, फिर विशाल पुण्य व सवाब प्रदान करता है, निश्चय तुम्हें रात में इबादत करने का आदेश दिया गया तो तुम ने इबादत की एवं तुम्हें दिन में रोज़ा रखने का आदेश दिया गया तो तुम ने रोज़े रखे, तुम ने अपने रब का पालन किया, अपने इनाम प्राप्त कर लो। फिर जब लोग ईद की नमाज़ संपादन करते हैं तो एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देता है, सुनो! निश्चच तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें बख्श दिया, अब तुम अपने घर लौट जाओ। इस स्थिति में के तुम हिदायत वाले हो, तो ये इनाम का दिन है तथा आकाश में इस दिन को इनाम का दिन कहा जाता है।

(अल मुअजम अल कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 616)

हज़रत शैख अब्दुल खादिर जीलानी हसनी हुसैनी ग़ौस-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ग़ुनयतुत तालिबीन में वर्णन हैः-

भाषांतरः हज़रत वहब बिन मिम्बा रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया के अल्लाह तआला ने ईदुल-फित्र के दिन जन्नत पैदा किया तथा इसी दिन तूबा --- का वृक्ष लगाया तथा हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम को वही के लिए चुनाव किया तथा इसी दिन हज़रत मूसा अलैहिस सलाम के सम्मुख आने वाले जादूगरों को तौबा नसीब हुई।

(अल ग़ुनयतुत तालिबीन तरीख हक़, जिल्द 02, पः 18)

सत्य ईद क्या है?

ज़ुबदतुल मुहद्दिसीन आरिफ बिल्लाह हज़रत अबुल हसनात सैय्यद अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिस-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह आदेश करते हैः-

निश्चय ईद की खुशी व प्रसन्नता मनाना भी मसनून है, किन्तु क्या मालूम के हमारे लिए ये ईद है या चेतावनी ? लोगो! असली ईद तो इस दिन होगी जिस दिन वह जाने-जहाँ हम पर नज़र फरमाएँगे

मुहावराः हम ग़रीबों की ईदगाह, अए मित्र तेरी गली है तथा ईद की खुशी हमें तेरे चेहरे को देखने से मिलती है।

मुहावराः ईद के 100 चाँद मैं तुझ पर क़ुर्बान करता हुँ, हमारी ईद का चाँद तेरे अब्र का खम है।

ईद की खुशी व आनन्द मनाना चाहिए इस लिए के ये भी सुन्नत है।

परन्तु लोगो! ईद तो इस दिन होगी जब हम अल्लाह तआला से मिलेंगे, इस स्थिति में के हम इस से सन्तुष्ट तथा वह हम से सन्तुष्ट। हमेशा इसी कोशिश में रहना चाहिए।

ये ईद और इस की खुशी दोनों फानी हैं, अल्लाह करे के वह दिन आए जिस में दिल की इसलाह व सुधारता होकर दिल, दिल्दार का हो जाए, वह दिन सत्य ईद का है, ये ईद भी बाखी तथा इस की खुशी भी बाखी।

ईद के दिन मुक्ति व मग़फिरत होती है इस लिए वह खुशी का दिन है। हज़रत रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आदेश करते हैं के बन्दे ईद के दिन अल्लाह तआला के दरबार (ईदगाह) में जाते हैं तो वहाँ से बख्शने बख्शवाने घरों को वापस होते हैं।

कुछ लोग शरीअत के विरुद्ध कार्य के अपराधी हो कर ईद की नमाज़ के लिए आते हैं। इन सब बुराईयों से दूर रह कर संबोधन के योग्य बन कर आना चाहिए।

(मवाईज़ हसना, जिल्द 01, पः 277)

हज़रत सालेह रहमतुल्लाहि अलैह प्रत्येक ईद के दिन अपने परिवार वालों को जमा करते तथा सब मिल कर रोते बैठते, लोगों ने इस बारे में पूछा के आप ऐसा क्यों करते हैं? कहने लगेः मैं गुलाम हूँ। अल्लाह तआला ने हमें नेकी करने तथा बुराई से बचने का आदेश दिया है। हमें मालूम नहीं के वह हम से पूरा हुआ या नहीं? ईद की खुशी मनाना उसे उचित है जो अल्लाह तआला के अज़ाब से अमन व शान्ति में हो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईद के दिन तन्हाई में बैठ कर इतना रोए के आप के धन्य रेश तर हो गई, लोगों ने पूछ क्या तो फरमायाः जिस को ये मालूम ना हो के इस के रोज़े स्वीकार हुएँ या नहीं वह ईद कैसे मनाए।

(मवाईज़ हसना, जिल्द 02, पः 315)

ईद मनाने का तरीका

मोमिन की ईद ये नहीं होती के वह इस में खेल-कूद करे तथा बुरे बातों में व्यस्त रहे बल्कि वह अल्लाह तआला की इबादत तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पालन में ईद मनाता है।

और ईद का तात्पर्य ही पालन व इबादत, खुशी व प्रसन्नता, आन्नद एवं सलामती व राहत है। बुद्धि के अनुसार इस दिन इबादत में छूट होनी चाहिए थी। इस के विरुद्ध अल्लाह तआला ने संप्रदाय व उम्मत पर एक और नमाज़ का समावेश वाजिब व अनिवार्य किया।

जिस में इस बात की शिक्षा है के बन्दे जब एक स्थान जमा हो जाएँ तो समाज में बिगाड़ पैदा होने के बजाए रब करीम की इबादत में रह कर मानव समाज को अपने संघठन से अमन व सलामती का सन्देश दें।

ईदगाह जाते समय रास्त में मध्यम आवाज़ में तकबीर कहना सुन्नत है। तकबीर इस लिए निर्धारित की गई है के मानवीय स्वभाव के अनुसार जब अधिक संख्या के जमाव होता है तो बिना कारण आवाज़ें बुलंद होती हैं तथा रास्ते से जाने वालों के लिए तकलीफ का कारण बनती हैं तथा रफ्ता-रफ्ता बात झगडे व फसाद तक पहुंच तक जाती है।

समाज व अर्थनीति वायु को बुराई से दूर करने के लिए तकबीर कहने का आदेश दिया गया। इस के अतिरिक्त ईद के दिन नमाज़ तथा तकीबरों से मोमिन बन्दें अल्लाह तआला के ज़िक्र कर के इस की बरकतों तथा रहमतों से विस्व को फैज़याब बनाते हैं क्यों के जब अब्र-करम बरस्ता है तो वह रहमत आम बन कर सब को अपने साये में लेता है।

ईद के दिन धनी व मालदार, निसाब वाले मोमिन पर सदखे फित्र (1 किलो 106 ग्राम गेहूँ या इस की राशि) संपादन करना वाजिब है ताकि ग़रीब, निर्धन व दरिद्र लोग भी ईद की खुशियों से वंचित व महरूम ना रहें।

इस के अतिरिक्त हर क्षेत्र के मुसलमान ईद की नमाज़ के बाद गरीबों व मोहताजों में घर वापस होने तक रास्ते भर अपना धन अल्लाह तआला की राह में खर्च करते हैं। ये कर्म मुसलमानों की दानशीलता व उदारता, संप्रदाय से प्रेम तथा इन पर कृपा को बढ़ाता है।

इस प्रकार ईद का आरम्भ से अंत तक मुसलमानों को प्रत्येक कर्म संसार में अमन व सलामती स्थापित करने का सन्देश देशवासियों व नागरिकों के नाम देता है।

ईद की विशेष दुआ

इमाम तबरानी की मुअजम औसत में ईदुल-फित्र तथा ईदुल अज़हा के अवसर पर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दुआ

व्याख्या है। नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने संप्रदाय व समुदाय को शिक्षा देने के लिए ये दुआ कीः-

भाषांतरः सैयदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित उन्होंने फरमायाः ईदैन के अवसर पर हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ये दुआ करतेः अए अल्लाह! हम तुझ से धर्मनिष्ठ व परहेज़गार जीवन एवं श्रेष्ठतर स्थिति में कुशल खात्मे का प्रश्न करते हैं, ऐसा परिणाम माँगते हैं जो ज़लील तथा निराश करने वाला ना हो। अए अल्लाह! तू हमें अचानक हलाक ना कर, तुरंत हमारा मुआखिज़ा परीक्षा ना फरमा तथा किसी अधिकार के संपादन या वसीयत पूरी करने से पूर्व हमें उजलत में मत ड़ाल, अए अल्लाह! हम तुझ से पाकदामनी पर परहेज़गारी व हिदायत माँगते हैं तथा संसार व परलोक के अच्छे परिणाम का प्रश्न करते हैं, हम शब व संदेह एवं अंतर तेरे धर्म में रियाकारी तथा नामवरी से तेरी पनाह में आते हैं, अए दिलों को फेरने वाले! हमें मार्गदर्शन व हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को तेढ़ा मत कर, तथा हमें अपनी ओर से रहमत प्रदान कर, निस्संदेह तू ही खूप प्रदान करने वाला है।

(अल मुअजम अल औसत लित तबरानी, हदीस संख्याः *7787*)

ये ईद के अवसर से अनुसार रखने वाली ऐसी सारांश दुआ है के इस में इन सम्पूर्ण चीज़ों की विनती है, जो प्रत्येक किसी के लिए संसार व परलोक में सफलता व भलाई, अमन व सलामती तथा एकता का माध्यम होती है।

रमज़ान के बाद हमारा जीवन कैसा हो?

रमज़ान में अल्लाह तआला ने जो रोज़े फर्ज़ किए हैं, इस का मुख्य हिकमत ये वर्णन की है के रोज़े की बकत से रोज़ेदार निष्ठा व तक़वे को

अपना लेता है तथा परहेज़गारी को अपना लेता है। जिस प्रकार सुरह बक़रह की 183 आयत में रोज़े के उद्देश्य वर्णन करते हुए आदेश कियाः-

भाषांतरः ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

(सुरह अल बक़रहः 02:183)

हर इमान वाले कि यह इच्छा होती है के इस का रब व मालिक (स्वामी) इस से राज़ी व सन्तुष्ट हो जाए। अल्लाह तआला इसे अपनी खुशनूदगी व प्रसन्नता से संबोधित व अनुदान करे।

हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मुहब्बत तथा आप के दरबार से नाता बन्दे मोमिन के जीवन का महत्वपूर्ण व प्रमुख उद्देश्य हुआ करता है। अर्थात वह अपनी उद्देश्य मंज़िल (नियति) तक पहुंचने के लिए पालन व आवेदन कि राह को अपनाता है।

शरीअत के निर्धारित अहकाम पर कार्यरत हो जाता है। हमेशां नेकियों को समापन देने कि चिन्ता करता है। बुराईयों से सीमित (नियंत्रति रहना) रहने कि कोशिश करता है तथा तक़वा व तहारत का जीवन गुज़ारता है।

अल्लाह तआला इसी बात से सन्तुष्ट व राज़ी होता है के इस के बन्दे सत्य कि राह पर रहें। अल्लाह तआला कि तथा इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन किया करें तथा धर्मनिष्ठ व धर्मपरायण व परहेज़गार बन जाएं।

रमज़ान मुबारक में अल्लाह तआला ने जो रोज़े फर्ज़ फरमाए हैं, हस की महत्वपूर्ण हिकमत (विवेक) यह वर्णन फरमाई के रोज़े कि बरकत से रोज़ेदार धर्मनिष्ठ को अपना लेता है तथा परहेज़गारी व धर्मपरायण को अपना लेता है।

जिस प्रकार सुरह बखरह कि 183 आयत मुबारक में रोज़े कि प्रशंसा व प्रतिभा वर्णन करते हुए आदेश फरमायाः- भाषांतरः- ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

(सुरह बखरहः 02:183)

स्पष्ट रहे के तक़वा तथा परहेज़गारी (धर्मनिष्ठ व धर्मपरायण) कि या स्थिति केवल प्रिय रमज़ान तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। वर्णन अल्लाह तआला के आदेश में जो उद्देश्य व लक्ष्य वर्णन किया गया इ से यही रोशनी मिलती है के रोज़ेदार का सम्पूर्ण जीवन तक़वा व परहेज़गारी (धर्मनिष्ठ व धर्मपरायण) दर्पण व आईनेदार हो।

माह रमज़ान में की जाने वाली इबादतें तथा उपासना अतीत (भूतकाल) कि यादगार बन कर ना रह जाएं बल्कि आने वाले जीवन में भी इन्हीं --- को अपनाया जाए। क्यों के तक़वा का तात्पर्य यही है के हमेशां अल्लाह कि रज़ा के हासिल करने कि चन्ता हो। बन्दे से कोई ऐसा कर्म समापन ना हो जो अल्लाह कि नाराज़गी का कारण हो।

धर्मनिष्ठ व तक़वा के अनेक अर्थ वर्णन किए गए हैं। अल्लामा सैयद महमूद आलूसी रहमतुल्लाहि अलैह लिखते हैं-

भाषांतरः- परहेज़ागरी यह है के अल्लाह तआला ने जिस चीज़ से मना फरमाया इस में तुझ व्यस्त ना पाय तथा जिस का आदेश फरमाया वहाँ अज्ञात व ग़ाफिल ना पाय।

(रुह उल अल मआनी, सुरह अल बखरहः 02)

क्या रमज़ान के बाद रहमत व बरकत का सिलसिला समाप्त हो गया?

मालूम हुआ के मोमिन के हर कर्म से तक़्वा व धर्मनिष्ठा का संबंध है। रमज़ान मुबारक हो या अन्य महिने, वह ऐसे ही कर्म को समाविष्ट करें जिस में अल्लाह तआ़ला कि प्रसन्नता हो तथा इस कर्म को हरगिज़ ना अपनाए जो अल्लाह कि मरज़ी के विरुद्ध हो।

पावन रमज़ान का सम्पूर्ण महीना हम नेकियों से अपना दामन भरते रहे। इस मुबारक महीने कि बरकतें तथा वरदान हमारे भाग्य में आती रहें। सारा महीना अल्लाह कि रहमत कि चादर हम पर तनी रहें। प्रश्न यह है के कया बरकतों का यह सिलसिला माह रमज़ान के बाद समाप्त हो जाएगा।

रहमतों कि जो चादर हम पर छायामात्र थी, कया माह रमज़ान गुज़र जाने के बाद खींच ली जाएगी? हरगिज़ नहीं! आवश्यकता इसी बात कि है के हम अपने भीतर महत्वपूर्म स्वभाव पैदा करें। अपने दामन को इस योग्य बनाएं के में हम संसार व आखिरत कि बरकतें समा सकें।

हम अपने भीतर इतनी --- पैदा करें रहमत के साये के नीचे ठहरने के अधिकारी बनें। ऐसा ना हो के केवल माह रमज़ान में नमाज़ी, क़ुरान कि तिलावत (अनुवाचन) करने वाले,, सदखे व क़ैरात में पहल करने वाले, रातों में इ़बादत करने वाले रहें तथा पावन रमज़ान के बाद --- का प्रदर्शित करने वाले, पापों पर तौबा --- करने वाले तथा शैतान के नक़्शे खदम पर चलने लगें। जिस के परिणाम में अल्लाह तआ़ला का क्रोध व ग़ज़ब व जलाल का शिकार हो जाएं। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

माह रमज़ान में हमें क़ैर व भलाई इस लिए दान की गई थी के हम ने परहेज़गारी अपनाई थी। सम्पूर्ण मास तक़्वा व तहारत (धर्मनिष्ठ) के

पाबंद रहे तथा इस के गुज़र जाने के बाद यदि हम तक़वा तथा परहेज़गारी पर अटल व इस्तेखामत के साथ जम रहें तो अवश्य हमारा जीवन खुशगवार रहेगा।

यदि रमज़ान के प्रकार अन्य महिनों में हमारे विश्वास व कर्म से संबंधित स्थायी आचरण पाई गई तो निस्संदेह हम क़ैर व बरकत से --- रहेंगे। तथा अवश्य खुदाए तअ़ाला रहीम कि करम से संबोधित करेगा हमें अपनी आगोश में ले लेंगे। जैसा के अल्लाह तअ़ाला का वादा है, सुरह अ़ाराफ में आदेश हो रहा हैः-

भाषांतरः- तथा मेरी रहमत व दयालुता हर चीज़ को आच्छादित है। तो मैं इसे अवश्य इन के अधिकार में लिख दुँगा जो परहेज़गारी (धर्मनिष्ठ) अपनाएगा।

(सुरह अल अ़ाराफः 07:156)

अल्लाह तअ़ाला के इस आदेश से उजागर हो रहा है के जब तक हम में तक़वा व तहारत है, हम विशेष रहमतों के साये में रहेंगा तथा जब तक हम में परहेज़गारी पाई जाए। चैन व विश्राम का जीवन उपलब्ध रहेगा।

हज़रत सईद बिन – रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि इस्तेखामत---

धर्म के पूर्वजों के जीवन से रोशनी प्राप्त करें के इन तक़वा किस कमाल को पहंचा हुआ था। धर्म पर इन कि इस्तेखामत (अटल व स्थिर) कैसी थी, हज़रत सईद बिन मुस्सैब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक विशाल व प्रधान ताबई़ गुज़रे हैं।

जिन्हें सैयुद ताबईन के लखब (शीर्षक व उपाधि) से दुनिया याद करती है। उन के हालात वर्णन करते हुए इमाम अबु नईम अस्फहानी ने हुलयतुल ऑलिया में वर्णन किया हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुल मुनईम --- बिन इद्रीस अपने पिता से वर्णित करते हैं, इन्हों ने फरमायाः हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 50 वर्ष तक इशां के वुज़ू से नमाज़ फज्र अदा फरमाई तथा हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन है के इन्हों ने फरमायाः 50 वर्ष से कभी मेरी तकबीर ऊला (प्रथम तकबीर) नहीं छूटी तथा ना मैं ने नमाज़ के अवसर पर 50 वर्ष से किसी पुरुष कि गुद्दी --- देखी है। (यथा हमेशा प्रथम सफ ही में तकबीर ऊला के साथ नमाज़ पढने का सौभाग्य व सुख प्राप्त रहा)।

(हुलयतुल ऑलिया व तबखात अल सुफिया, तबखतुल अहले महीना, सईद बिन अल मुसैयब, पः 186-187)

यहाँ उदाहरण के रूप में हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि घटना वर्णन की गई। वरना हमारे सम्पूर्ण --- किराम तथा प्रिय सालेहीन के जीवन इस प्रकार कि पालन व --- के घटना व --- से --- हैं। जिन से हमें अपने जीवन को पवित्रता व शुद्धता बनाने का अभ्यास व पाठ मिलता है।

ग़ौर व सकेंद्रित फरमाएं के हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि इस्तेखामत कि क्या स्थिति है। खुद आप उपर्युक्त फरमा रहे हैं के 50 वर्ष का लम्बा काल गुज़र चुका परन्तु मैं ने की पहली सफ के अलावा जमात के साथ नमाज़ संपादन ना की।

जिस के बिना मैं ने कभी अलगी सफ वालों कि गुद्दी नहीं देखी। 50 वर्ष में पीढी बदल जाती है। सरकार व राज्य बदल जाती है। यूवक बूढापे को पहुंच जाता है। परन्तु 50 वर्ष के लम्बी काल में आप के इस्तेखामत का पाये में अंश बराबर अंतर ना आया।

इस प्रकार लम्बे काल में बाजमात नमाज़ के संपादन, प्रथम तकबीर का व्यवस्था, प्रथम सफ में शिरकत निस्संदेह असामान्य रूप से इस्तेखामत कि आईनेदार हैं। रमज़ान के बाद जीवन को बेहतर व श्रेष्टतर बनाने वालों के लिए तथा परहेज़गारी पर अटल रहने वालों के लिए एक उत्तम व सर्वश्रेष्ठ आदर्श व उदाहरण है।

रमज़ान का महिना समाप्त हुआ, अल्लाह का फैज़ान नहीं!

याद रखें के हम ने रमज़ान के महिने को तो विदा किया है परन्तु इस के फैज़ान को विदा नहीं किया। क़ुरान कि तिलावत को विदा नहीं किया। अच्छे कर्म को विदा नहीं किया, जिस प्रकार हम रमज़ान मुबारक में अच्छे कर्म संपादन करते थे, इस सिलसिले को रमज़ान के बाद भी जारी रखें।

इस महिने में हमारा हर कदम (कार्यवाही) नेकी तथा भलाई कि ओर उठा करता था, धीरज व सहनशीलता (सब्र व धेर्य) व धन्यवाद व शुक्र हमारा पेशा बन चुका था। यह रफतार व चरित्र रमज़ान के महिने के बाद भी बाखी रहे।

रमज़ान के महिने में हमारा हर कर्म पावन शरीअत कि रोशनी में हुआ करता था। रमज़ान मुबारक के गुज़रने के बाद इस पालन में ग़फलत व अज्ञानता ना होने पाय। इमान वालों का यह आदर्श व वर्ग के वह अल्लाह के अहकाम से --- करें।

रमज़ान के रोज़ेदारों का यह तरीक़ा नहीं के वह इस महिने के गुज़र जाने के बाद इरशाद नबवी से दूरी प्राप्त करें। क्यों के शरीअ़त तो इ़मानवालों पर हर परिस्थिति में अनिवार्य है।

धर्म पर निष्ठा रहने वाले लोक परलोक में धन्य

रमज़ान मुबारक हो या अन्य महिने, हर परिस्थिति में शरीअ़त पर दृढ़ता अवश्य है तथा धर्म पर दृढ़ता व निष्ठा ही सफलता है। अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम मजीद में इन बन्दों को सराहा है जो अपने विश्वास व कर्म में अटल व स्थिर रहते हैं। जैसा के निम्नलिखित आयत मुबारक में आदेश हैः-

भाषांतरः- जिन लोगों ने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है।" फिर इस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उनपर फ़रिश्ते उतरते है कि "न डरो तथा न शोकाकुल" हो, तथा उस जन्नत की शुभ सूचना लो जिसका तुमसे वादा किया गया है।

(सुरह हा. मीम. सजदा 41:30)

एक मोमिन बन्दे में अपने विश्वास व कर्म पर निष्ठा जीवन भर तक रहनी चाहिए। मरते दम तक वह इसलाम के अहकाम पर दृढ़ता पूर्वक रहे तथा अपने अच्छे कर्म पर पाबंदी करें। तभी वह दुनिया व आखिरत (लोक परलोक) में अनुमन्त्रित व भाग्य का अधिकारी होगा। अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः-

भाषांतरः- ऐ ईमानवालो! अल्लाह का डर रखो, जैसा की उसका डर रखने का हक़ है। तथा तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो।

(सुरह आले इ़मरान 03:102)

जो लोग अल्लाह तआ़ला का आज्ञापालन में व्यस्त रहते हैं। दिन रात इस कि नाफर्मानी व आज्ञालंघन से अवरोध करते हैं। रात दिन इस कि इ़बादत व बन्दगी किया करते हैं। इसी कि हम्द व सना (प्रशंसा व गुणगान) तथा याद में अपने --- गुज़ारा करते हैं।

अल्लाह तआ़ला कि सन्तुष्टी व प्रसन्नता के लिए रात भर इ़बादत करते हैं। तथा --- व्यापार व कारोबार इन्हें अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकते। ऐसे बन्दों को क़यामत के दिन सम्माननीय स्थान दिया जाएगा। जिस दिन हर व्यक्ति अल्लाह कि बारगाह में खौफ व भय, बेचैनी व चिन्ती के साथ उपस्थित होगा। उस दिन इन्हें अमन व शान्ति, राहत व रहमत से संबोधित कर उन कि शान प्रकट की जाएगी।

मुसतदरक अ़ला सहिहैन में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- ऐ इमानवालो अल्लाह से डरो जिस प्रकार इस से डरने का हक़ है तथा इसलाम कि स्थिति पर ही संसार से विदा हो जाओ। सैयदना उ़खबा बिन अ़ामिर जहनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः हम हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के साथ एक यात्रा में थे तो हम बारी-बारी से ऊँटों को चराने कि ज़िम्मेदारी लेते थे. जब मेरी बारी आई तो मैं ने अपने ऊँटों को चर ने के लिए बेजा। फिर वापस हो कर हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि पावन सेवा में उपस्थित हुआ। जबके आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) सहाबा किराम के बीच खुत्बा आदेश फरमा रहे थे। तो मैं ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) को यह आदेश फरमाते हुए सुनाः लोगों को एक ऐसे मैदान में जमा किया जाएगा के नेत्र उन को पालेगी। दाई़ उन को अपनी आवाज़ सुनाएगा। एक सूचना देने वाला सूचना देगाः- अवश्य सम्पूर्ण झुण्ड जान लेगा के आज बढाई किस के लिए है। यह सूचना 3 बार होगी। फिर

सूचना देने वाला कहेगाः वह लोग कहां हैं जिन को पहलू --- से अलग हो जाया करते थे? फिर कहेगाः-

वह लोग कहाँ हैं जिन्हें अल्लाह के ज़िक्र से, नमाज़ संपादन करने तथा ज़कात समापन करने से ना व्यापार अज्ञात करती थी तथा ना लेन-देन, वह इस दिन से डरते थे जिस में दिल तथा निगाहें – होंगी। फिर सूचना देने वाला सूचना देगाः अवश्य सम्पूर्ण लोग जान लेंगे के आज बढाईकिस के लिए है। फिर कहेगाः खूब हम्द (प्रशंसा व गुणगान) करने वाले कहाँ है जो अपने रब कि हम्द व सना (प्रशंसा व गुणगान) सुना करते थे। यह सहीह हदीस है।

(अल मुसतदरक अ़ला सहिहैन, तफसीर सुरह अल नूर, हदीस संख्याः 3467)

निष्ठा व दृढ़ता के बारे में अल्लामा इ़समाईल हख्खी रहमतुल्लाहि अलैह ने रूह उल बयान में लिखा हैः-

भाषांतरः- शेक़ अबु तालिब रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया कामकाज को पाबंदी संपादन देना इ़मान वालों के शिष्टाचार से है तथा इ़बादत गुज़ारों का तरीक़ा है अधिक यह इ़मान में अधिकता का कारण तथा --- के लक्षण है।

(तफसीर रूह अल बयान, सुरह आले इ़मरान -112)

धर्म पर निष्ठा कि बरकत

नेक कर्म पर स्थिर व अटल, क़ैर व भलाई को परिणाम देने पर दृढ़ा के कारण से मानव का स्थान व प्रतिष्ठा बुलंद होता है। कठिनाईयां दूर हो जाती हैं। जैसा के – नज़हतुल मंजालिस में बनी इसराईल कि एक हमेशां स्थायी, धर्म पर अटल रहना तथा इ़बादत गुज़ार महिला कि घटना वर्णन हैः-

भाषांतरः- बनी इसराईल में एक धर्मनिष्ठ महिला नमाज़ को समय कि पाबंदी के साथ संपादन करती थी। इस महिला का पति ग़ैर मुसलिम था (पूर्व शरीअ़त में ग़ैर मुसलिम से विवाह करना मना नहीं था)। जो उसे नमाज़ से रोकता था तथा वह महिला इस कि बात नहीं मानती थी। पति ने इस महिला के पास कुछ धन अमानत रखाई। फिर खुद उसे चोरी किया तथा उसे समुद्र में डाल दिया।

उस धन को एक मछली ने निंगला तो एक शिकारी ने उस मछली का शिकार किया तथा उसे नेक व भली महिला के पति को बेच दिया। महिला ने मछली ली ताकि उसे उपयोग करे तो इस के पेट में वह थैली पाई, जिस में अमानत का धन रखा हुआ था। फिर इस ने थैली को उस के स्थान रख दिया तथा पती ने उस से वह अमानत इच्छा की तो महिला ने अमानत को यह सुरक्षा से वापिस कर दिया। पती ने अमानत कि वापसी पर आश्चर्य किया। महिला ने --- जलाया ताकि उस पर रोटी पकाए तो ग़ैर मुसलिम पती ने महिला को --- में फैंक डाला, महिला ने कहाः ऐ वह तन्हा ज़ात जिस का कोई शरीक नहीं! मैं आग कि ताब नहीं ला सकती, तो अल्लाह तआ़ला के आदेश से इसी समय आग बुझ गई।

(नज़हतुल मंजालिस जिल्द 1, पः 105)

माह रमज़ान में कि गई शिक्षा का उद्देश्य

रमज़ान के महिने में विशेष रूप से हमारी रूहानी शिक्षा की गई थी। रोज़े कि स्थिति में हम ने यह बात हमेशां लिहाज़ रखी के अल्लाह तआ़ला हमें देख रहा है। यही कारण था के रोज़ेदार बंद कमरे में भी भूक से बेचान, प्यास से बेताब होने के बावजूद कभी कुछ खा-पी लेने कि प्रयत्न व कशिश नहीं किया क्यों के इस को विश्वास है के कोई देखे या ना देखे, मेरा रब मुझ से बेखबर नहीं है। मेरा पालनहार तो मुझे देख

रहा है। क्यों कि इसे प्रथम ही से सावधान किया गया था। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- क्या वह नहीं जानता के अल्लाह तआ़ला देख रहा है।

(सुरह अल अलक़ 96:14)

इस शिक्षा का लक्ष्य यही है के रमज़ान के बाद भी हर समय मानव यही कैफियत अपने भीतर बाखी रखे तथा हमेशां इस को पेश नज़र रखे के मालिक व मौला मुझे देख रहा है। मेरी चरित्र व व्यवहार, देखना-सुन्ना तथा चाल-चलन पर नज़र रखा हुआ है। यह कैफियत बाखी रहे तथा यह बात बुद्धिम में रखनी चाहिए के खदम कभी नाजाइज़ स्थान कि ओर नहीं पढेंगे।

इस कि ज़बान कभी अपशब्द व दुर्वचन में व्यस्त नहीं होगी, हाथ कभी शरीअ़त के विरुद्ध कर्म का समापन नहीं करेंगे तथा आँखें कभी धृष्ट छवि तथा ग़ैर महरम कि ओर नहीं उठेंगी।

रमज़ान कि शिक्षा फिक्र व कर्म कि सुरक्षा का माध्यम

पावन रमज़ान कि इस विशाल रूहानी शिक्षा के बाद कल क़यामत के दिन कोई व्यक्ति तकलीफ नहीं कर सकेगा के नफ्स व शैतान के छल व कपट में आकर हम पाप कर बैठे हैं। क्यों के एक माह कि शिक्षा में शैतान को क़ैद कर दिया गया तथा रोज़ों के द्वारा नफ्स कि इसलाह व सुधराव की गई।

क़ुरान करीम कि तिलावत तथा तरावीह के द्वारा रूहानी शक्ति में अधिकता कर दिया गया। जिस प्रकार देश कि सुरक्षा के लिए सेना तैयार कर के सीमांत (सरहद) पर कढा किया जाता है ताकि विरोधी देश में प्रवेश ना हो।

इसी प्रकार का इ़मान का देश जो नेक व भले कर्म के द्वारा आबाद है इस कि सुरक्षा के लिए मानव को रूहानी शिक्षा की गई तथा इसे --- कर दिया गया के कहीं शैतान इस के इ़मान व विश्वास (अखीदे) तथा नेक कर्म को बरबाद व विनाश ना कर सके।

रमज़ान के बाद भी हमें नेक कर्म करते हुए तक़वा तहारत वाला जीवन बसर करना अनिवार्य है तथा प्रिय शरीअ़त के हर आदेश पर अभिनय करना अवश्य है। क्यों के हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम जो अ़मल फरमाते हमेशां इस पर हमेशां करते थे तथा इस कर्म को छोडना नहीं फरमाते। आप का कर्म किसी ज़माना या काल पर घेरा हुआ नहीं होता। जैसा के सहीह बुखारी व सहीह मुसलिम शरीफ आदि में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अ़लखमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः मैं ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दिखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से पूछा करते हुए निवेदन कियाः ऐ उम्मुल मोमिनीन! हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का मुबारक अ़मल कैसा हुआ करता, कया आप (सल्लल्ल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) (अ़मल व कर्म के लिए) कुछ दिन विशेष फरमाया करते थे? हज़रत उ़म्मुल मोमिनीन ने फरमायाः नहीं! आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) अ़मल मुबारक हमेशा हुआ करता, तुम में कौन इस प्रकार अ़मल कर सकता है? जिस प्रकार हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने किया हो।

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 1865, सहीह बुखारी हदीस संख्याः 1981)

मुसलमान कि प्रतिष्ठा के रूप हमारी ज़िम्मेदारी है के हम अल्लाह तआ़ला तथा इस के रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के अहकाम पर अ़मल पैरा हैं। पाँच समय कि नमाज़ जमात के साथ पढने का प्रबंध करें।

क़ुरान करीम कि तिलावत करें, माता-पिता कि सेवा करें। ग़रीबों व दरिद्र का ख्याल रखें। निर्धन व रहित लोग कि मदद करें। अल्लाह के अधिकार व इ़बाद के अधिकार का समापन में सुस्ती व आलस्य ना करें।

अल्लाह कि बारगाह में दुआ़ करें के अल्लाह तआ़ला रमज़ान के महिने कि तरह साल भर हमें अपनी रहमतों व दयालुता के साये में इ़बादत व बन्दगी में व्यस्त रखे। आज्ञापालन कि मार्गदर्शन दान फरमाएं। पापों के अभियुक्त, शैतान के छल व कपट से बचाए। अपने हबीब पाक अलैहिस सलाम के संरक्षण में हमें अवज्ञा से दूर रखे।

नेक व भले कर्म करने कि मार्गदर्शन प्रदान फरमाए तथा हर शर से सावधान व सुरक्षित रखे।

आमीन